"कान्यकुब्ज वाणी"

यह पत्रिका "अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज सभा लखनऊ" संस्था के मुखपृष्ठ के रूप में कार्य करेगी। पत्रिका का नाम "कान्यकुब्ज वाणी" होगा।

"सम्पादक मंडल" में एक अध्यक्ष महासचिव एक कोषाध्यक्ष सम्पादक एक या दो सह सम्पादक और विधिक आवश्यकताओं के लिये एक विधिक सलाहकार का पद होगा।

कान्यकुब्ज सभा के अध्यक्ष महासचिव और कोषाध्यक्ष ही पत्रिका के अध्यक्ष महासचिव और कोषाध्यक्ष होंगे। सम्पादक अपने विवेक और आवश्यकतानुसार एक या दो सह सम्पादक नामित करेंगे।

अभी पत्रिका का प्रकाशन वार्षिक ही होगा। प्रतिवर्ष इसका विमोचन वार्षिक होली मिलन समारोह में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि द्वारा किया जायेगा। भविष्य में सदस्यों के अनुरोध पर इसे अर्धवार्षिक अथवा त्रैमासिक किया जा सकता है।

पत्रिका में साहित्यिक धार्मिक एतिहासिक लेख व्यंग्य तथा कहानी और कवितायें व अन्य उपयोगी सामिग्री होगी। रचनाकारों को कोई पारिश्रमिक देय नहीं होगा।

पत्रिका में दिवंगत विभूतियों के लिये "श्रद्धांजली" शीर्षक से एक स्तम्भ होगा। परिवार वाले इस स्तम्भ मे अपने पूर्वजों की पुण्य स्मृति में पत्रिका को अनुदान दे कर संस्मरण छपवा सकते हैं।

यह भी निश्चित किया गया है कि पत्रिका में किसी भी जीवित व्यक्ति का स्तुतिगान नहीं छापा जायेगा।

अभी पत्रिका का प्रकाशन सदस्यों द्वारा दिये अनुदान से हो रहा है अतएव पत्रिका वार्षिक समारोह में निःशुल्क वितरित की जायेगी। आभामडंल के जो सदस्य समारोह में नही उपस्थित हो सकते उन्हें पत्रिका साधारण डाक द्वारा उनके पते पर भेज दी जायेगी

आभा मडंल अभी पत्रिका के प्रकाशन की भविष्य की व्यवस्था हेतु विज्ञापनों एवं अतिरिक्त अनुदान की आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिये "आभा मंडल" का गठन किया गया है। इसमें अनुदान के लिये कुछ अलंकारिक पदवियॉ बनाई गई हैं। अलंकारिक पदवी एवं उनके अनुदान राशि नीचे दिये गये हैं।

कान्यकुब्ज "वाणी संरक्षक"	रू। **10000=00**
कान्यकुब्ज "वाणी पुत्र"	रू **5000=00**
कान्यकुब्ज "वाणी बन्धु"	रू **3000=00**
कान्यकुब्ज वाणी "विशिष्ठ सदस्य"	रू **2000=00**
कान्यकुब्ज वाणी "आजीवन सदस्य"	रू **1000=00**

उर्पयुक्त अलंकारों से प्राप्त धन राशि सावधि जमा के रूप में रहेगी। इसकी वार्षिक आय अगामी अंको के प्रकाशन हेतु उपयोग में। लाई जायेगी

आभा मडंल द्वारा प्राप्त राशि फिक्स्ड डिपाज़िट के रूप में संचित रखी जायेगी जिससे कि भविष्य में प्रकाशन का व्यय यथा सम्भव उक्त डिपाज़िट से प्राप्त ब्याज से निर्बाध रूप से होता रहे।

पत्रिका में सदस्यों की लिस्ट वैवाहिक विज्ञापन आदि नहीं छापे जायेंगे। इससे पत्रिका का अनधिकृत आर्थिक लाभ की सम्भावना कम होगी।

"कान्यकुब्ज वाणी" के प्रकाशन के पहले से ही सभा की अधिकृत web site- kanyakubj.org इन्टरनेट पर उपलब्ध है। जिस पर सभा की गतिविधियॉ आवश्यक और उपयोगी जानकारी उपलब्ध है। वेब साइट पर विवाह योग्य वर और कन्याओं की सूची उपलब्ध है।

"कान्यकुब्ज वाणी" के उद्देश्य

1 पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य जुड़ने और जोड़ने के लिये "कान्यकुब्ज वाणी" पत्रिका के प्रत्येक अंक के मुखपृष्ठ छपा होगा।

2 प्रख्यात कान्यकुब्ज साहित्यकारों के बारे में पाठकों को परिचित कराना।

3 स्थापित साहित्यकारों की रचनाओं को आशीर्वाद के रूप में और उदयीमान रचनाकारों को प्रकाशन का मंच सुलभ कराना।